SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

सामाजिक परिपक्वता एवं संवेगात्मक बुद्धि का अंतःसंबंध : किशोरावस्था के विद्यार्थियों पर आधारित अध्ययन

तारा ध्रुव, शोधार्थी, **सरोज नैय्यर,** पीएच–डी, शिक्षा विभाग
कलिंगा विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Authors
तारा ध्रुव, शोधार्थी
सरोज नैय्यर, पीएच–डी
E-mail : taradhruw72@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 05/02/2026
Revised on : 06/04/2026
Accepted on : 15/04/2026
Overall Similarity : 00% on 07/04/2026

Plagiarism Checker X - Report
Originality Assessment
0%
Overall Similarity

Date: Apr 7, 2026 (03:47 PM)
Matches: 0 / 2036 words
Sources: 0

Remarks: No similarity found, your document looks healthy.

Verify Report: Scan this QR Code

शोध सार

किशोरावस्था मानव विकास का एक संवेदनशील चरण है, जिसमें विद्यार्थियों में सामाजिक, भावनात्मक और संज्ञानात्मक परिवर्तनों की तीव्रता बढ़ जाती है। इस शोध का उद्देश्य किशोर विद्यार्थियों में सामाजिक परिपक्वता और संवेगात्मक बुद्धि के बीच विद्यमान संबंध का अध्ययन करना था। अध्ययन हेतु महासमुन्द जिले के 200 विद्यार्थियों (100 छात्र और 100 छात्राएँ) का यादृच्छिक रूप से चयन किया गया। सामाजिक परिपक्वता मापन हेतु नलिनी राव (2018) की सामाजिक परिपक्वता मापनी तथा संवेगात्मक बुद्धि मापन हेतु सरकार एवं सरकार द्वारा निर्मित मापनी का प्रयोग किया गया। प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषणSPSS (V–28.0.0) के माध्यम से सहसंबंध पद्धति द्वारा किया गया। विश्लेषण से ज्ञात हुआ कि सामाजिक परिपक्वता का मध्यमान 242.38 तथा संवेगात्मक बुद्धि का मध्यमान 193.74 है। सहसंबंध गुणांक r = 0.51 प्राप्त हुआ, जो .05 के सार्थकता स्तर पर महत्वपूर्ण है। यह परिणाम संकेत करता है कि सामाजिक परिपक्वता और संवेगात्मक बुद्धि के बीच मध्यम एवं सकारात्मक संबंध मौजूद है। इससे स्पष्ट होता है कि जिन किशोरों की सामाजिक परिपक्वता अधिक होती है, वे भावनात्मक परिस्थितियों को अधिक प्रभावी ढंग से समझते, संभालते और नियंत्रित करते हैं। अध्ययन के निष्कर्ष शिक्षा, नीति, परामर्श कार्यक्रमों तथा विद्यालयी जीवन–कौशल शिक्षा के लिए महत्वपूर्ण दिशा प्रदान करते हैं। यह शोध किशोर विद्यार्थियों के समग्र विकास में सामाजिक एवं भावनात्मक कौशलों की अनिवार्यता को रेखांकित करता है तथा भविष्य में व्यापक नमूने और विविध सामाजिक समूहों पर आधारित अनुसंधान की आवश्यकता को भी इंगित करता है।

मुख्य शब्द

सामाजिक परिपक्वता, संवेगात्मक बुद्धि, किशोरावस्था, सहसंबंध, व्यक्तित्व विकास

परिचय

किशोरावस्था मनुष्य के विकास का वह चरण है जिसमें शारीरिक, मानसिक और सामाजिक परिवर्तन तेज़ी से सामने आते हैं। इस उम्र के विद्यार्थियों में नई परिस्थितियों को समझने, अपने व्यवहार को नियंत्रित करने और सामाजिक संबंधों को सँभालने की क्षमता विकसित होने लगती है। इसी संदर्भ में सामाजिक परिपक्वता और संवेगात्मक बुद्धि अत्यंत महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक पहलू हैं, जो विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण, शिक्षा–संबंधी प्रदर्शन और सामाजिक अनुकूलन को गहराई से प्रभावित करते हैं। सामाजिक परिपक्वता व्यक्ति की सामाजिक भूमिकाओं को निभाने, उत्तरदायित्व समझने, उचित निर्णय लेने और समाज के नियमों के अनुरूप व्यवहार करने की क्षमता को दर्शाती है। इसके विपरीत, संवेगात्मक बुद्धि उन क्षमताओं का समूह है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपनी भावनाओं को पहचानता, समझता और नियंत्रित करता है, साथ ही दूसरों की भावनाओं के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित करता है। यह कौशल विद्यार्थियों की भावनात्मक स्थिरता, आत्म–नियंत्रण और संबंध कौशल के लिए अत्यंत आवश्यक है। किशोरावस्था के विद्यार्थी अक्सर साथियों के दबाव, पहचान–निर्माण, शैक्षणिक प्रतिस्पर्धा और भावनात्मक उतार–चढ़ाव जैसी स्थितियों का सामना करते हैं। ऐसे में सामाजिक परिपक्वता और संवेगात्मक बुद्धि दोनों ही उन्हें संतुलित व्यवहार करने, तनाव को समझदारी से प्रबंधित करने और स्वस्थ सामाजिक संपर्क स्थापित करने में मदद करते हैं। वर्तमान समय में स्कूल वातावरण में तनाव, व्यवहारगत कठिनाइयों और मानसिक असंतुलन जैसी समस्याएँ बढ़ने के कारण इन दोनों मनोवैज्ञानिक कारकों की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो गई है। यदि इनके मध्य सकारात्मक संबंध स्थापित होता है, तो शिक्षा संस्थानों के लिए जीवन–कौशल विकास, भावनात्मक शिक्षा और परामर्श प्रक्रियाओं को और अधिक प्रभावी बनाने के नए मार्ग खुल सकते हैं।

इसी पृष्ठभूमि में प्रस्तुत यह शोध पत्र किशोर विद्यार्थियों में सामाजिक परिपक्वता और संवेगात्मक बुद्धि के बीच विद्यमान अंतःसंबंध की जाँच करता है। यह अध्ययन न केवल इन दोनों चर के व्यवहारिक प्रभावों को रेखांकित करेगा, बल्कि किशोर अवस्था के विद्यार्थियों के समग्र विकास हेतु उपयुक्त शिक्षण रणनीतियों, परामर्श कार्यक्रमों और व्यक्तिगत मार्गदर्शन मॉडल के निर्माण में भी उपयोगी सिद्ध होगा। इस प्रकार, यह शोध शैक्षिक मनोविज्ञान और किशोर विकास की समझ को गहराई प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

संबंधित शोध अध्ययनों की समीक्षा

जोटिंग (2020) ने पाया कि महाराष्ट्र के 11वीं–12वीं के अधिकांश किशोर औसत स्तर की सामाजिक परिपक्वता प्रदर्शित करते हैं और लिंग, आयु, पारिवारिक आय तथा क्षेत्र के अनुसार सामाजिक परिपक्वता में कोई सार्थक अंतर नहीं है। जयश्री और रानी (2021) ने निष्कर्ष निकाला कि आंध्र प्रदेश के किशोरों की सामाजिक परिपक्वता औसत से ऊपर है, लिंग के अनुसार उसमें महत्वपूर्ण अंतर है, तथा सामाजिक समायोजन और सामाजिक परिपक्वता के बीच नकारात्मक सहसंबंध पाया गया। मिश्रा और अन्य (2017) ने बताया कि सुल्तानपुर शहर के इंटर कॉलेज के अधिकतर लड़के व लड़कियाँ उच्च सामाजिक परिपक्वता स्तर पर हैं, जिसमें लड़कियों का स्तर अपेक्षाकृत अधिक है। बोर्धन (2015) ने दिखाया कि हाई स्कूल विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि की भविष्यवाणी में सामाजिक परिपक्वता अन्य मनोवैज्ञानिक चरों की तुलना में सबसे अधिक योगदान देती है और लिंग तथा ग्रामीण–शहरी पृष्ठभूमि के आधार पर सामाजिक परिपक्वता में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं मिला। सैम और तोतुका (2021) ने निष्कर्ष निकाला कि जिन किशोरों की सामाजिक परिपक्वता अधिक है, उनकी शैक्षिक रुचि और अकादमिक अभिरुचि भी अपेक्षाकृत उच्च स्तर की होती है। दाश और बैरिगंजन (2021) ने ओडिशा के कक्षा–IX के किशोरों पर किए गए अध्ययन में संवेगात्मक बुद्धि और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच सकारात्मक सहसंबंध तथा दोनों ही में लिंग के आधार पर कोई महत्वपूर्ण अंतर न होने की पुष्टि की। रिबा और अन्य (2024) ने अरुणाचल प्रदेश के किशोरों में संवेगात्मक बुद्धि का स्तर उच्च, सामाजिक समायोजन का स्तर मध्यम तथा दोनों के बीच उच्च सकारात्मक सहसंबंध पाया। पूनम और सहाने (2025) ने पंजाब के वरिष्ठ माध्यमिक विद्यार्थियों पर शोध में दिखाया कि समायोजन संवेगात्मक बुद्धि और सामाजिक दक्षता दोनों से सार्थक रूप से जुड़ा है तथा इन दोनों में से संवेगात्मक बुद्धि समायोजन की अधिक शक्तिशाली भविष्यवक्ता के रूप में उभरती है। बीका (2021) ने गुजरात के किशोर विद्यार्थियों में संवेगात्मक बुद्धि और समायोजन के बीच सकारात्मक और महत्वपूर्ण सहसंबंध की पुष्टि की एवं पाया गया कि माध्यमिक स्तर के अधिकांश विद्यालयी किशोर उच्च संवेगात्मक बुद्धि स्तर रखते हैं और ग्रामीण–शहरी पृष्ठभूमि के आधार पर संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

शोध उद्देश्य

किशोरावस्था के विद्यार्थियों में सामाजिक परिपक्वता और संवेगात्मक बुद्धि के बीच के अंतर्संबंध का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना

H_{01}: किशोरावस्था के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता और संवेगात्मक बुद्धि के बीच कोई महत्वपूर्ण सहसंबंध नहीं पाया जायेगा।

शोध प्रविधि

जनसंख्या: महासमुन्द जिले (छत्तीसगढ़ राज्य) के समस्त उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों को जनसंख्या के रूप में इस शोध में लिया गया है।

न्यादर्श: यादृच्छिक रूप से चयनित 200 उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थी जिसमें 100 छात्र एवं 100 छात्राएं समान संख्या में सम्मिलित की गई हैं।

उपकरण

सामाजिक परिपक्वता हेतु नलिनी राव (2018) द्वारा निर्मित, सामाजिक परिपक्वता मापनी का प्रयोग किया गया है, जिसमें कुल 90 पद है एवं 9 विभिन्न आयामों पर निर्मित किया गया है इस मापनी की विश्वसनीयता 0.74 है ।

संवेगात्मक बुद्धि के मापन के लिए सरकार एवं सरकार द्वारा निर्माण की गई संवेगात्मक बुद्धि मापनी का प्रयोग इस शोध में किया गया है, जिसमें कुल 40 पद है एवं 5 विभिन्न आयामों पर निर्मित किया गया है इस मापनी की विश्वसनीयता 0.847 है ।

विश्लेषण

एस. पी. एस. एस. सॉफ्टवेयर वर्जन 28.0.0 की सहायता से प्रयुक्त चरों के मध्य सहसंबंध सांख्यिकी द्वारा विश्लेषण निम्न रूप से है:

तालिका 1: सामाजिक परिपक्वता एवं संवेगात्मक बुद्धि के मध्य सहसंबंध

चर	कुल	मध्यमान	r
सामाजिक परिपक्वता	200	242.38	0.51
संवेगात्मक बुद्धि		193.74	
सार्थकता स्तर .05 df=199			

व्याख्या

दिए गए आँकड़ों के अनुसार किशोर विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता का कुल न्यादर्श 200 तथा मध्यमान 242. 38 पाया गया, जबकि संवेगात्मक बुद्धि का मध्यमान 193.74 दर्ज किया गया है। दोनों चर के बीच सहसंबंध गुणांक $r = 0.$ 51 प्राप्त हुआ, जो यह संकेत करता है कि सामाजिक परिपक्वता और संवेगात्मक बुद्धि के बीच मध्यम एवं सकारात्मक संबंध उपस्थित है। यह सहसंबंध .05 के सार्थकता स्तर तथा $df = 199$ पर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण माना जाता है, जिससे स्पष्ट होता है कि जैसे–जैसे विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता बढ़ती है, उनकी संवेगात्मक बुद्धि भी बढ़ती हुई पाई जाती है। अर्थात शोधार्थी द्वारा निर्मित शून्य परिकल्पना, "किशोरावस्था के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता और संवेगात्मक बुद्धि के बीच कोई महत्वपूर्ण सहसंबंध नहीं पाया जायेगा" अस्वीकृत की जाती है।

यह परिणाम अध्ययन के उस दृष्टिकोण को समर्थन देता है कि सामाजिक रूप से परिपक्व विद्यार्थी भावनाओं को समझने, नियंत्रित करने तथा सामाजिक परिस्थितियों में बेहतर अनुकूलन करने में अधिक सक्षम होते हैं।

निष्कर्ष

अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं कि किशोर विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता और संवेगात्मक बुद्धि के बीच मध्यम तथा सकारात्मक सहसंबंध मौजूद है। सहसंबंध गुणांक $r = 0.51$ इस बात का प्रमाण है कि सामाजिक रूप से परिपक्व विद्यार्थी अपनी और दूसरों की भावनाओं को बेहतर ढंग से समझने तथा नियंत्रित करने में सक्षम होते हैं। यह संबंध सांख्यिकीय रूप से भी महत्वपूर्ण पाया गया, जो बताता है कि जैसे–जैसे सामाजिक परिपक्वता बढ़ती है, विद्यार्थी भावनात्मक रूप से अधिक सक्षम और संतुलित व्यवहार प्रदर्शित करते हैं। किशोरावस्था एक संक्रमणकाल है, इसलिए इस आयु में विकसित होने वाली सामाजिक एवं भावनात्मक क्षमताएँ व्यक्ति के भविष्य के व्यक्तित्व, संबंधों और निर्णय क्षमता को दीर्घकाल तक प्रभावित करती हैं। शोध से यह भी संकेत मिलता है कि विद्यालयी वातावरण, शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया, शिक्षक–विद्यार्थी संबंध तथा

पारिवारिक समर्थन प्रणाली किशोरों की सामाजिक और भावनात्मक क्षमताओं के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। अतः विद्यालयों को चाहिए कि वे ऐसे कार्यक्रमों को बढ़ावा दें जो सहानुभूति, सहयोग, भावनात्मक नियंत्रण, संचार कौशल तथा समूह–कार्य को प्रोत्साहित करें। जीवन–कौशल आधारित शिक्षा, परामर्श सेवाओं, व्यक्तित्व विकास कार्यक्रमों और नाट्य/रोल–प्ले आधारित गतिविधियों को पाठ्यचर्या में शामिल करना विद्यार्थियों की सामाजिक और भावनात्मक दक्षता के विकास में सहायक सिद्ध हो सकता है। अभिभावकों एवं शिक्षकों को भी यह समझना आवश्यक है कि सामाजिक परिपक्वता और संवेगात्मक बुद्धि जन्मजात नहीं होती, बल्कि उपयुक्त वातावरण, प्रशिक्षण और अनुभव के माध्यम से विकसित की जा सकती है। भविष्य के शोधों के लिए सुझाव है कि बड़े एवं विविध नमूने, विभिन्न सामाजिकदृसांस्कृतिक पृष्ठभूमि तथा गुणात्मक पद्धतियों के माध्यम से इन दोनों चरों की प्रकृति एवं प्रभाव को और गहराई से समझा जा सके। समग्र रूप से, यह अध्ययन इस महत्वपूर्ण तथ्य को रेखांकित करता है कि सामाजिक और संवेगात्मक क्षमताएँ किशोर विद्यार्थियों के स्वस्थ, संतुलित और सशक्त व्यक्तित्व निर्माण की आधारशिला हैं।

सुझाव

विद्यालयी परिवेश में सामाजिक परिपक्वता और संवेगात्मक बुद्धि के विकास को प्रोत्साहित करने के लिए आवश्यक है कि शिक्षण अधिगम प्रक्रियाओं में ऐसे कार्यक्रम शामिल किए जाएँ जो जीवन–कौशल, सहयोग, सहानुभूति और भावनात्मक समझ को बढ़ावा दें। इसके लिए समूह गतिविधियाँ, संवाद आधारित अधिगम, नाट्य प्रस्तुति, नैतिक शिक्षा तथा व्यवहार सुधार संबंधी कार्यशालाएँ नियमित रूप से आयोजित की जा सकती हैं। शिक्षकों को भी संवेगात्मक बुद्धि और कक्षा प्रबंधन के प्रशिक्षण प्रदान किए जाएँ ताकि वे विद्यार्थियों की भावनात्मक और सामाजिक आवश्यकताओं को अधिक प्रभावी रूप से समझ सकें साथ ही, विद्यालयों में परामर्श सेवाओं को मजबूत बनाया जाए ताकि किशोर विद्यार्थियों को तनाव, संबंधों और भावनात्मक चुनौतियों का सामना करने में पेशेवर सहायता मिल सके। अभिभावकों को जागरूक कर घर में सहयोग, सकारात्मक संवाद और भावनात्मक समर्थन का वातावरण बनाने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। भविष्य के शोधों में बड़े नमूने, विविध सामाजिक समूहों और विभिन्न आयु के विद्यार्थियों को शामिल कर निष्कर्षों की व्यापकता बढ़ाई जा सकती है। गुणात्मक अध्ययनों के माध्यम से यह भी समझा जा सकता है कि सामाजिक परिपक्वता और संवेगात्मक बुद्धि वास्तविक जीवन की परिस्थितियों में विद्यार्थियों के व्यवहार को किस प्रकार प्रभावित करती हैं। इस प्रकार के संयुक्त प्रयास किशोर विद्यार्थियों के संतुलित एवं सशक्त व्यक्तित्व निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

संदर्भ सूची

1. Bika, S. L. (2021) Understanding adolescent students' emotional intelligence and adjustment. *International Journal of Creative Research Thoughts*, 9(8), 552–555.
2. Bordhan, S. (2015) Role of social maturity in academic achievement of high school students. *International Journal of Applied Research,* 1(7), 44–46.
3. Dash, L. & Bairiganjan, C. (2021) Emotional intelligence and academic achievement of adolescents. *International Advanced Research Journal in Science, Engineering and Technology,* 8(8), 628–632.
4. Jayasree, D. & Swarupa Rani, T. (2021) A study of social adjustment and social maturity of adolescents. *Journal of Emerging Technologies and Innovative Research,* 8(12), 453–459.
5. Mishra, A.; Dubey, S. & Kumari, M. (2017) A study on social maturity of adolescent in Sultanpur city. *International Journal of Home Science,* 3(2), 278–283.
6. Poonam & Sawhney, S. (2025) Adjustment among adolescents in relation to their emotional intelligence and social competence. *Journal of Emerging Technologies and Innovative Research, 12(6), 480–486.*
7. Riba, D., Sharma, M., & Padu, A. (2024) Emotional intelligence and social adjustment among adolescents of Arunachal Pradesh. *International Journal of Multidisciplinary Research in Arts, Science and Technology,* 2(7), 1–12.
8. Sam, S. & Totuka, N. (2021) Social maturity and academic interests of adolescents. *International Journal of Home Science,* 7(1), 159–166.
9. Zoting, R. Y. (2020) Social maturity of adolescent students. *International Journal of Home Science,* 6(1), 108–111.

****